

# Bhajan

# 14

भज मन रामं महा अभिरामम्

भज मन रामं महा अभिरामम् ॥

अस्ति भाति शुचि प्रियस्वरूपम् ।

त्रिगुणातीतं चैतन्य रूपम् ।

जगदाधारं जगद् विरामम् ॥ १ ॥

शक्तिमयं पुरुषोत्तम ईशम् ।

भक्त-वत्सलं श्री जगदीशम् ।

पूर्ण पुरुषं पूर्ण कामम् ॥ २ ॥

सुने री मैंने, निरबल के बल राम

सुने री मैंने, निरबल के बल राम ।  
पिछली साख भरूँ संतन की,  
अड़े सँवारे काम ॥ १ ॥

जब लगी गज बल अपनो बरत्यो,  
नेक सरयो नहिं काम ।  
निरबल हवै बल राम पुकारयो,  
आये आधे नाम ॥ २ ॥

दुपदसुता निरबल भइ ता दिन,  
तजि आये निज धाम ।  
दुस्सासन की भुजा थकित भई,  
वसन रूप भये स्याम ॥ ३ ॥

अप-बल तप-बल और बाहु-बल,  
चौथो है बल दाम ।  
'सूर' किसोर कृपा तें सब बल,  
हारे को हरि नाम ॥ ४ ॥

राम नाम लौ लागी

राम नाम लौ लागी ।  
अब मोहे राम नाम लौ लागी ॥

उदय हुआ शुभ भाग्य का भानु,  
भक्ति भवानी जागी ॥ १ ॥

मिट गये संशय भव भय भारे,  
भ्रान्ति भूल भी भागी ॥ २ ॥

पाप हरण श्री राम चरण का,  
मन बन गया अनुरागी ॥ ३ ॥

राम राम श्री राम जय जय राम

सतगुरू मिले मेरे सारे दुख बिसरे

सतगुरू मिले मेरे सारे दुख बिसरे,  
अंतर के पट खुल गये री ॥

ज्ञान की आग लगी घट भीतर,  
कोटी कर्म सब जल गये री,  
पाँच चोर लूटे थे रात दिन,  
आप ही आप निकल गये री ॥  
सतगुरू मिले . . .

बिना दीप हमरे भया उजाला,  
तिमिर कहां सब नस गये री,  
फिर नैनी सी धार बहत है,  
अष्ट कमल दल खिल गये री ॥  
सतगुरू मिले . . .

कोटी भानु हमरे भया प्रकाशा,  
होरे ही रंग बदल गये री,  
अडसठ तीरथ हैं घट भीतर,  
आपस में सब मिल गये री ॥  
सतगुरू मिले . . .

सूने महल में परेशान होइ,  
अमि के कुंड उड़ल गये री,  
कहत कबीर सुनो भई साधो,  
नूर मे नूर,  
परमात्मा में आत्मा, मिल गये री ॥  
सतगुरू मिले . . .

राम मुझे मधुर मिलन मिले तेरा

राम मुझे मधुर मिलन मिले तेरा ॥

मन मुख माया मुख बन मोही,  
भरम में भटका बहुतेरा ॥ १ ॥

अशरण-शरण की चरण शरण में,  
निश दिन बने बसेरा ॥ २ ॥

गाऊँ मैं राम राम मधुर धुन,  
सब दिन सांझ सबेरा ॥ ३ ॥

तेरे मेल में मिल हो जायें,  
'मैं' तेरा 'तू' मेरा ॥ ४ ॥

सबसे ऊँची प्रेम सगाई

सबसे ऊँची प्रेम सगाई ॥

दुर्योधन को मेवा त्याग्यो,  
साग विदुर घर खाई ॥  
सबसे ऊँची प्रेम सगाई . . .

जूठे फल शबरी के खाये,  
बहु विधि स्वाद बताई,  
प्रेम के वश नृप सेवा किन्हीं,  
आप बने हरि नाई ॥  
सबसे ऊँची प्रेम सगाई . . .

राजसूय यज्ञ युधिष्ठिर किन्हीं,  
तामें जूठ उठाई,  
प्रेम के वश अर्जुन रथ हांक्यो,  
भूलि गये ठकुराई ॥  
सबसे ऊँची प्रेम सगाई . . .

ऐसी प्रीति बढी वृन्दावन,  
गोपियन नाच नचाई,  
सुर क्रूर इस लायक नाहीं,  
कह लागि करौ बडाई ॥  
सबसे ऊँची प्रेम सगाई . . .

हरि का रंग

हरि का रंग में रे प्रभु का रंग में,  
के मीरा जाग्यो थारो भाग, हरि का रंग में ॥

जहर पियालो राणों भेज्यो, ज्यों मीरा के हाथ,  
हरि चरणांमृत पी गयी रे, तुम जाणो रघुनाथ ॥  
के मीरा जाग्यो . . .

सर्प पिटारो राणों भेजो, ज्यों मीरा ने मार,  
खोल पिटारो देखण लागी, बण गयो नौलख हार ॥  
के मीरा जाग्यो . . .

शेर पिंजरो राणों भेजो, ज्यों मीर नू जाय,  
खोल पिंजरो देखण लागी, बण गई भोली गाय ॥  
के मीरा जाग्यो . . .

धुन -- वन्दे रामं सच्चिदानन्दम्